क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

संचालन द्वाराः योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569 243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर.ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेलः kriyayoga.canada@yahoo

बेवसाइटः kriyayoga-yogisatyam.org
क्रम संख्या .....

प्रकाशनार्थ

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है
दिनाँक :

भगवान श्रीकृष्ण की सम्पूर्ण शिक्षा क्रियायोग का अभ्यास है

21 फरवरी, 2013 इलाहाबाद । मुक्ति मार्ग पर सेवारत क्रियायोग शिविर में अन्तर्राष्ट्रीय संत स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने क्रियायोग ध्यान कराते हुए श्रीमद्भगवद्गीता की विस्तारपूर्वक अनुकरणीय आध्यात्मिक व्याख्या करते हुए स्पष्ट किया कि योगेश्वर श्रीकृष्ण के मार्ग का अनुसरण करने पर साधक के अंदर श्रीमद्भगवद्गीता तथा समस्त शास्त्रों का ज्ञान स्वतः प्रकट हो जाता है । योगेश्वर श्रीकृष्ण ने स्पष्ट रूप से कहा है कि सभी वृक्षों में मैं अश्वत्थः हूँ । अश्वत्थः को स्पष्ट करते हुए पन्द्रहवे अध्याय के पहले श्लोक कहा गया है कि ऐसी रचना जिसकी जड़ उर्ध्व व शाखाएँ नीचे है, अश्वत्थः है ।

अश्वत्थः सर्ववक्षाणामं देवर्षीणाच्च नारदः ॥ गन्धर्वाणां चित्ररथःसिदानां कपिलोमुनिः ॥

-श्रीमद्भगवदगीता 10:26

उर्ध्वमूलमधः शाखमश्वथं प्राहुरव्ययम । छन्दासि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित ॥

- श्रीमद्भगवद्गीता 15:1

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे कहा कि ब्रह्माण्डीय समस्त रचनाओं में एकमात्र मानव का स्वरूप ऐसा है जिसकी जड़ सिर (उर्ध्व) व शाखाएँ नीचे (अधो) हैं । मानव स्वरूप में सिर जड़ और रीढ़ प्रमुख तना है । सिर व रीढ़ से निकलने वाली समस्त नाड़ियाँ जिन्हें स्पाइनल और

केनियल नर्व कहा गया है, शाखाओं के रूप में हैं । स्वामी जी ने स्पष्ट किया कि वृक्ष का अभिप्राय मात्र पेड़ से नहीं है । किसी भी रचना का विशालतम दृश्य स्वरूप वृक्ष है । जैसे बीज का विशालतम स्वरूप जिसे पेड़ कहते हैं, वृक्ष है । इसी प्रकार अंडे से मुर्गी प्रकट होती है । अतः मुर्गी का स्वरूप वृक्ष है । समस्त वृक्षों में मानव स्वरूप को अश्वत्थः कहा गया है । मानव को अपने स्वरूप में एकाग्रता का अभ्यास ही भगवान श्रीकृष्ण की शिक्षा का अनुकरण है तथा यही क्रियायोग ध्यान का अभ्यास है। क्रियायोग ध्यान में साधक मन को स्वरूप में केन्द्रित करते हुए प्रकट होने वाले समस्त परिवर्तनों को परब्रह्म शक्ति के रूप में स्वीकार करने का अभ्यास करता है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे स्पष्ट किया कि मानव स्वरूप में प्रकट होने वाले समस्त परिवर्तन जिन्हें हम कड़ापन–ढीलापन, दर्द–आराम, हल्कापन–भारीपन आदि के रूप में अनुभव करते हैं, अश्वत्थः वृक्ष की पत्तियॉ हैं जिन्हें वेदों की रिचाएँ कहते हैं । क्रियायोग ध्यान के द्वारा स्वरूप में मन को केन्द्रित कर समस्त परिवर्तनों से जुड़ने का अभ्यास ही वेद अनुभव करने की क्रिया है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने अभ्यास कराते हुए अनुभव कराया कि सिर से पैर की अँगुली तक भिन्न–भिन्न परिवर्तनों को सुख–दुख, कड़ापन–ढीलापन, हल्कापन–भारीपन आदि के रूप में स्वीकार करना ही माया है । इन समस्त परिवर्तनों को वेदों में निहित ज्ञान के रूप में समझना के मार्ग पर चलने की क्रिया है ।

क्रियायोग के अभ्यास से मानव, मानव के अंदर ईश्वर की अनुभूति करने के महत्वपूर्ण आवश्यक कर्म का संपादन करेगा और आपसी लड़ाई–झगड़ा धीरे–धीरे कम होने लगेगा तथा 12500 ई0 में लड़ाई–झगड़ा बंद हो जाएगा और सभी राष्ट्र एक दूसरे से आत्मिक प्रेम से जुड जाएँगे।

क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8:00 बजे से 10:00 बजे तक तथा दोपहर 2:30 बजे से सायं 6:00 बजे तक और रात्रि 11:00 बजे से 1:00 बजे तक हिन्दी तथा अँग्रजी भाषा में बड़े ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।

- योगमाता